**हांऊ हांऊ रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, ए तो दीधो लडसडतां रे।**
**एवा तो ठेक अमे सहु कोई देतां, सेहेजे रामत करतां रे।।५ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, अरे-अरे! सखियो! तुम वालाजी की छलांग की तारीफ करती हो। इन्होंने तो लड़खड़ाती हुई छलांग लगाई है। ऐसी छलांग तो हम सब साधारण खेल में ही लगा लेते हैं।

**रहो रहो रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, हवे जो जो अमारो ठेक रे।**
**एत्री तो फाल साथे केटलीक दीधी, तूं तो मोही उडाडतां रेत रे।।६ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! रुको, तुमने वालाजी की छलांग की प्रशंसा की है। अब हमारी छलांग भी देखो। ऐसी छलांगें तो सुन्दरसाथ ने कितनी ही कूद डाली हैं। तुम तो सिर्फ रेत उड़ाने में ही मोहित हो गईं।

**कोणे हंसिए कोणे वखाणिए, ए रामत थई अति रंग रे।**
**एणी विधे दीधां अमे ठेक, मारा वालाजीने संग रे।।७ ।।**

किसकी हंसी और किसकी प्रशंसा करें? यह खेल तो अति अच्छा हुआ। इस तरह की छलांग वालाजी के साथ मैंने भी लगाई।

**ए रामतडी जोई करीने, हवे निरतनी रामत कीजे रे।**
**रूडी रामत इंद्रावती केरी, जेमां साथ वालो मन रीझे रे।।८ ।।**

इस रामत को देखकर, चलो, अब नृत्य की रामत करें। जिसमें श्री इन्द्रावतीजी की अच्छी रामत देखकर सुन्दरसाथ और वालाजी भी रीझ जाएं।

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ ५८२ ॥

## राग कल्याण

**वाला तमे निरत करो मारा नाहोजी रे, अमने जोयानी खांत।**
**साथ जोई आनंदियो रे, कांई वेख देखी एक भांत।। १ ।।**

हे प्राण-वल्लभ! अब आप नृत्य करें तो हमें देखने की इच्छा है। आपका विशेष भेष देखकर सब साथ खुश हो रहे हैं।

**तमे निरत करो रे भामनी, निरत रूडी थाय नार।**
**तमे वचन गाओ प्रेमना, पासे स्वर पूरूं रसाल।। २ ।।**

वालाजी कहते हैं, हे सखियो! स्त्रियां नाच अच्छा नाचती हैं। इसलिए आप नाचो। तुम प्रेम भरे गीत गाओ। मैं तुम्हारे साथ मधुर स्वर मिलाऊंगा।

**सुणो सुन्दर वल्लभजी मारा, निरत केणी पेरे थाय।**
**अमने देखाडो आयत करी, कांई उलट अंग न माय।। ३ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे प्राण-वल्लभ! सुनो, हम चाहती हैं कि आप पहले बताओ नाचा कैसे जाता है? हमारी खुशी अंग में समाती नहीं है।

**जेणी सनंधे पांउं भरो, अने अंग वालो नरम।**
**भमरी फरो जेणी भांतसुं, अमे नाचूं फरूं तेम।। ४ ।।**

जिस तरह से आप पैर चलाएंगे, अंग को मोड़ेंगे, भमरी (भंवर) फिरेंगे। हम भी देखकर वैसे ही नाचेंगी और उसी तरह फिरेंगी।

Nijanand App

**हस्त करी देखाडिए, अने ठमके दीजे पाय।**
**वचन गाइए प्रेमनां, कांई तेना अरथज थाय।। ५ ।।**

हाथ चलाकर दिखाइए। आप पैरों से ठुमका लगाकर बताइए। प्रेम वाले ऐसे गीत गाइए जिनका कुछ अर्थ हो।

**कंठ करीने राग अलापिए, कांई स्वर पूरे सकल साथ।**
**वेण वेणा रबाब सों, कांई ताल बाजे पखाज।। ६ ।।**

अपने गले से राग अलापिए। हम सब साथ स्वर पूरा करेंगे—बांसुरी, वीणा, सारंगी, नाल और पखावज सब बाजे बजेंगे।

**करताल मां बाजे झरमरी, कांई श्रीमंडल हाथ।**
**चंग तंबूरे रंग मले, वालो नाचे सकल साथ।। ७ ।।**

करताल में झांझरी बजेगी। हाथ से श्रीमण्डल बजेगा। मृदंग और तानपूरा स्वर मिलायेंगे तथा सब साथ नाचेगा।

**भूखण बाजे भली भांतसूं, धरती करे धमकार।**
**सब्द उठे सोहांमणा, उछरंग वाध्यो अपार।। ८ ।।**

नृत्य में आभूषण बजते हैं। धरती में धमक उठती है। सुहावने स्वर उठते हैं। इस प्रकार से बहुत आनन्द बढ़ा है।

**निरत करी नरम अंगसूं, कांई फेरी फरया एक पाय।**
**छेक वाले छेलाईसूं, तत्ता थेई थेई थाय।। ९ ।।**

वालाजी नरम अंग से, एक पांव पर नाचे। चतुराई से पैर से ठेका देते हैं, तो 'तत्ता थेई तत्ता थेई' का स्वर गूंजता है।

**एक पोहोर आनन्द भरी, कांई रंग भर रमिया एह।**
**साथ सकल मां वालेजी ए, रमतां कीधां सनेह।। १० ।।**

एक प्रहर तक आनन्दपूर्ण नृत्य का खेल खेला गया। वालाजी ने नृत्य करके सुन्दरसाथ में प्रेम बढ़ाया।

**आनंद घणो इंद्रावती, वालाजीने लागे पाए।**
**अवसर छे कांई अति घणो, वाला रासनी रामत मांहें।। ११ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी बहुत खुश होकर वालाजी के चरणों में प्रणाम करती हैं और कहती हैं, हे वालाजी! रास की रामत खेलने का यह बड़ा अच्छा मौका है।

**ते सर्वे चित धरी, अमसूं रमो अति रंग।**
**कहे इंद्रावती साथने, रमवानी घणी उमंग।। १२ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि आपने जो नाचने का ढंग सिखाया है, वह हमने सीख लिया है। हमारी बड़ी इच्छा है कि अब आप हमारे साथ नाचो।

॥ प्रकरण ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ ५९४ ॥

## चरचरी छंद

**मृदंग चंग, तंबूर रंग, अति उमंग, गावती सखी स्वर करी।। १ ।।**

मृदंग, चंग, तंबूरा के स्वर के साथ उमंग दिल में भरकर सखियां आनन्द के साथ गाती हैं।

Nijanand App